सूरह – एक कहानी

सूरह अल-बय्यिना

रौशन दलील

पूरा सफ़र – मख़्लूक़ में सबसे बेहतर और सबसे बदतर –
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 98 • 8 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

लम यकुनिल्-लज़ीन कफ़रू... मुन्फ़क्कीन हत्ता त'तियहुमुल्-बय्यिनह

1. मुनकिर लोग बाज़ आने वाले न थे जब तक उनके पास रौशन दलील न आ जाए।

रसूलुम्-मिनल्-लाहि यत्लू सुहुफ़म्-मुतह्हरह

2. अल्लाह का एक रसूल जो पाक सहीफ़े पढ़ कर सुनाए।

व मा उमिरू इल्ला लि-य'बुदुल्-लाह मुख़्लिसीन लहुद्-दीन

5. और उन्हें सिर्फ़ यही हुक्म दिया गया था कि ख़ालिस हो कर अल्लाह की इबादत करें।

उलाइक हुम शर्रुल्-बरिय्यह

6. यही लोग मख़्लूक़ में सबसे बदतर हैं।

उलाइक हुम ख़ैरुल्-बरिय्यह

7. यही लोग मख़्लूक़ में सबसे बेहतर हैं।

रज़ियल्-लाहु 'अन्हुम व रज़ू 'अन्ह

8. अल्लाह उनसे राज़ी और वो अल्लाह से राज़ी।

एक ऐसी गाँठ जिसे खुलना ज़रूरी था

बेटा, यह सूरह एक लंबे, बड़े एहतियात से बने हुए जुमले से शुरू होती है — और उसकी बनावट ही पैग़ाम है।

'लम यकुनिल्-लज़ीन कफ़रू मिन अहलिल्-किताबि वल्-मुश्रिकीन मुन्फ़क्कीन हत्ता त'तियहुमुल्-बय्यिनह — अहल-ए-किताब और मुश्रिकीन में से जो मुनकिर थे, वो अपनी हालत से अलग होने वाले न थे, यहाँ तक कि उनके पास रौशन दलील आ जाए।'

बेटा, 'मुन्फ़क्कीन' का मतलब है अलग होना, छूट जाना, उस चीज़ से निकल आना जिससे आप चिपके हुए हैं। तो अल्लाह एक गाँठ का नक़्शा खींच रहे हैं: दो गिरोह, दोनों अटके हुए। अहल-ए-किताब — जिनके पास ऐसे सहीफ़े थे जिनमें सदियों से तब्दीली हो चुकी थी और जो फ़िरक़ों में बँट चुके थे। और अरब के मुश्रिकीन बुत-परस्ती में

इतने डूबे हुए थे कि वो उन्हीं पत्थरों को पूजते थे जो ख़ुद तराशते थे।

और कोई भी गिरोह अपने आप इससे निकलने वाला नहीं था। न फ़लसफ़े से, न इस्लाही तहरीकों से, न वक़्त गुज़रने से। इंसानियत अटकी हुई थी — और सिर्फ़ एक चीज़ उसे निकाल सकती थी: 'अल-बय्यिना', रौशन दलील।

और वो रौशन दलील है क्या? अल्लाह अगली आयत में उसकी तारीफ़ करते हैं: 'रसूलुम्-मिनल्लाहि यत्लू सुहुफ़म्-मुतह्हरह — अल्लाह का एक रसूल, जो पाक सहीफ़े पढ़ कर सुनाए — फ़ीहा कुतुबुन क़य्यिमह — जिनमें दुरुस्त, सीधी तहरीरें हों।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: रौशन दलील अकेली किताब नहीं है — यह एक रसूल है जो किताब पढ़ कर सुनाता है। क्योंकि बग़ैर ज़िंदा उस्ताद के किताब के हज़ार मतलब निकल आते हैं; मगर एक रसूल आपको दिखा देता है कि ये अल्फ़ाज़ जब कोई इंसान जीता है तो दिखते कैसे हैं।

और लफ़्ज़ 'मुतह्हरह' देखिए — पाक सहीफ़े। तहरीफ़ से पाक, इंसानी मिलावट से पाक, उन ग़लतियों से पाक जो पहले वाली किताबों में घुस आई थीं। और 'कुतुबुन क़य्यिमह' — वो तहरीरें जो सीधी हैं, जो क़ाइम हैं, जो टेढ़े पन को ठीक करती हैं।

वो दलील आने के बाद बँटे

फिर एक ऐसी आयत आती है जो एक आम गुमान को उलट देती है: 'व मा तफ़र्रक़ल्-लज़ीन ऊतुल्-किताब इल्ला मिन ब'दि मा जा-अत्हुमुल्-बय्यिनह — और जिन्हें किताब दी गई थी वो अलग अलग नहीं हुए, मगर रौशन दलील उनके पास आ जाने के बाद।'

बेटा, इसे ग़ौर से पढ़िए, क्योंकि यह हैरत-अंगेज़ है। आप तवक़्क़ो करेंगे कि लोग इसलिए बँटते हैं कि उन्हें हिदायत नहीं पहुँची। अल्लाह इसके उलट फ़रमा रहे हैं: वो उसके आने के बाद बँटे।

क्यों? क्योंकि सच आने से पहले इख़्तिलाफ़ एक ईमानदाराना उलझन होती है। उसके आने के बाद इख़्तिलाफ़ एक चुनाव बन जाता है — एक इनकार, जो हसद से, मर्तबे

से, और किसी दूसरे की क़यादत क़ुबूल न करने से आता है। उलमा निशानदेही करते हैं कि अहल-ए-किताब में से बहुत से लोग आख़िरी रसूल की निशानियाँ अपनी ही किताबों में पहचानते थे — और उन्हें सिर्फ़ इसलिए रद्द किया कि वो उनकी क़ौम से नहीं आए।

बेटा, यह हमारे लिए भी तंबीह है। हमारी अपनी उम्मत के इख़्तिलाफ़ात शाज़ ही इस वजह से होते हैं कि सच वाज़ेह नहीं। वो अक्सर अना की वजह से होते हैं, किसी गिरोह की वफ़ादारी की वजह से, और इस इनकार की वजह से कि दलील क़ुबूल न की जाए क्योंकि वो किसी ऐसे शख़्स से आई है जो हमें पसंद नहीं।

हर हुक्म, एक ही आयत में

और अब बेटा, वो आयत आती है जिसे उलमा ने सारे आसमानी दीन का ख़ुलासा कहा है: 'व मा उमिरू इल्ला लि-य'बुदुल्लाह मुख़्लिसीन लहुद्-दीन हुनफ़ा — और उन्हें कोई हुक्म नहीं दिया गया था सिवाए इसके कि वो अल्लाह की इबादत करें, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए, हक़ की तरफ़ झुके हुए — व युक़ीमुस्-सलात व यु'तुज़्-ज़कात — और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें — व ज़ालिक दीनुल्-क़य्यिमह — और यही सीधा दीन है।'

बेटा, इस एक आयत में गिनते जाइए:

एक — अल्लाह की इबादत करो। दो — 'मुख़्लिसीन लहुद्-दीन': इख़्लास के साथ, सिर्फ़ उसी के लिए। तीन — 'हुनफ़ा': बातिल से हट कर ख़ालिस तौहीद की तरफ़ झुके हुए, जैसे इब्राहीम (अलैहि०) थे। चार — नमाज़ क़ाइम करो। पाँच — ज़कात दो।

और फिर: 'यही सीधा दीन है।' बेटा, नूह (अलैहि०) से ले कर मुहम्मद ﷺ तक हर नबी इसी असल के साथ आया। शरीअतों की तफ़सीलात क़ौमों के दरमियान अलग रहीं, मगर तना हमेशा एक ही रहा: अकेले अल्लाह की इबादत, ख़ालिस, और उस इबादत का नमाज़ और देने से जुड़ा होना।

और ख़ास तौर पर वो जोड़ी देखिए जो पूरे क़ुरआन में चलती है, बेटा: नमाज़ और

ज़कात। अल्लाह के साथ आपका ताल्लुक़, और उसकी मख़लूक़ के साथ आपका ताल्लुक़। जानमाज़ और खुला हाथ। इस्लाम ने कभी एक को दूसरे के बग़ैर क़ुबूल नहीं किया।

और 'मुख़्लिसीन' पर ग़ौर कीजिए — क्योंकि यही इस आयत का दिल है। इख़्लास के बग़ैर इबादत एक तमाशा है। एक शख़्स सालों नमाज़ पढ़ सकता है और सालों दे सकता है, और यह सब कुछ भी न हो अगर वो नाज़रीन इंसान चाहता था।

मख़्लूक़ में सबसे बदतर, और सबसे बेहतर

और अब बेटा, यह सूरह वो काम करती है जो क़ुरआन में कहीं और इन्हीं अल्फ़ाज़ के साथ नहीं मिलता: यह इंसानियत के दोनों किनारों का नाम एक ही तरकीब से लेती है।

'इन्नल्-लज़ीन कफ़रू मिन अहलिल्-किताबि वल्-मुश्रिकीन फ़ी नारि जहन्नम ख़ालिदीन फ़ीहा — बेशक अहल-ए-किताब और मुश्रिकीन में से जिन्होंने इनकार किया वो जहन्नम की आग में होंगे, हमेशा के लिए — उलाइक हुम शर्रुल्-बरिय्यह — यही मख़लूक़ में सबसे बदतर हैं।'

'बरिय्यह', बेटा, का मतलब है वो सब कुछ जो अल्लाह ने वुजूद में लाया — सारी मख़लूक़ात। तो उन्हें जानवरों से बदतर कहा गया, कीड़ों से बदतर, पत्थरों से बदतर। क्यों? क्योंकि उन मख़लूक़ात ने कभी उस काम से इनकार नहीं किया जिसके लिए वो बनाई गई थीं। शहद की मक्खी अपना काम करती है; पहाड़ अपनी जगह थामे रहता है। सिर्फ़ इंसान, जिसे अक़्ल और इख़्तियार और एक रौशन दलील दी गई, इनकार करता है।

और फिर, फ़ौरन: 'इन्नल्-लज़ीन आमनू व 'अमिलुस्-सालिहाति उलाइक हुम ख़ैरुल्-बरिय्यह — बेशक जो ईमान लाए और नेक अमल किए — यही मख़लूक़ में सबसे बेहतर हैं।'

बेटा, इस पर थोड़ा बैठिए। अल्लाह की पैदा की हुई हर चीज़ में सबसे बेहतर। पहाड़ों से

बेहतर, समुंदरों से बेहतर, फ़रिश्तों से बेहतर — और इस आख़िरी मुक़ाबले पर उलमा ने तफ़सील से बात की है; बहुत से उलमा इस राय के हैं कि इंसानों में से नेक मोमिनीन इस ए'तिबार से फ़रिश्तों से बढ़ जाते हैं, क्योंकि फ़रिश्ता बग़ैर किसी ना-फ़रमानी की ख़्वाहिश के इताअत करता है, जबकि इंसान उन ख़्वाहिशों को उठाते हुए इताअत करता है जो दूसरी तरफ़ खींचती हैं।

तो इन दो आयतों की हैरत-अंगेज़ हक़ीक़त यह है, बेटा: एक ही मख़लूक़ — एक ही जिस्म, एक ही बूँद से शुरूआत — अल्लाह की पैदा की हुई सबसे बदतर चीज़ हो सकती है, या सबसे बेहतर। कायनात में किसी और चीज़ में इतना दायरा नहीं। और फ़ैसला कौन करता है? ज़हानत नहीं, दौलत नहीं, ख़ानदान नहीं। सिर्फ़ दो चीज़ें: ईमान, और नेक अमल।

वो उनसे राज़ी, और वो उनसे

और सूरह अज्र पर ख़त्म होती है — और बेटा, आख़िरी सतर पूरी सूरह का सबसे क़ीमती हिस्सा है:

'जज़ा-उहुम 'इंद रब्बिहिम जन्नातु 'अद्निन तज्री मिन तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा अबदा — उनका अज्र उनके रब के पास हमेशा रहने वाले बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बहती हैं, वो उनमें हमेशा हमेशा रहेंगे।'

बेटा, 'जन्नातु 'अद्न' — हमेशा की रिहाइश वाले बाग़। और फिर अल्लाह एक ही जुमले में दाइमी होने का ज़िक्र तीन बार करते हैं: 'अद्न (हमेशा), ख़ालिदीन (रहने वाले), अबदा (हमेशा के लिए)। क्योंकि इंसानी दिल का ख़ुशी के बारे में सबसे गहरा ख़ौफ़ यही है कि यह ख़त्म हो जाएगी — और अल्लाह उस ख़ौफ़ का जवाब तीन मर्तबा देते हैं।

'रज़ियल्-लाहु 'अन्हुम व रज़ू 'अन्ह — अल्लाह उनसे राज़ी हैं, और वो अल्लाह से राज़ी हैं।'

बेटा, जन्नत की हर चीज़ में से — नहरें, बाग़, हमेशा का क़याम — यही चोटी है। यह

कि अल्लाह, रब्बुल आलमीन, अपने बंदे से राज़ी हैं। इब्नुल क़य्यिम और दूसरों ने लिखा कि जन्नत की कोई लज़्ज़त उस लम्हे का मुक़ाबला नहीं कर सकती जब अल्लाह अहल-ए-जन्नत से एलान फ़रमाएँगे: मैं तुमसे राज़ी हूँ, और इसके बाद कभी ना-राज़ नहीं हूँगा।

और दोनों हिस्से देखिए, बेटा: 'रज़ियल्लाहु 'अन्हुम' — वो उनसे राज़ी हैं; 'व रज़ू 'अन्ह' — और वो उनसे राज़ी हैं। यह दो-तरफ़ा है। और यह इस दुनिया में भी उल्टा चलता है: जो यहाँ अल्लाह से राज़ी रहे — उनके फ़ैसले पर, उनके वक़्त पर, उनके देने और रोकने पर — वो वहाँ उनकी रज़ा कमाता है।

'ज़ालिक लि-मन ख़शिय रब्बह — यह उसके लिए है जो अपने रब से डरा।'

बेटा, सूरह का आख़िरी लफ़्ज़ 'ख़शिय' है — डर। और देखिए कैसा डर: 'ख़श्यह' किसी भयानक चीज़ का ख़ौफ़ नहीं; यह वो डर है जो इल्म और मोहब्बत के साथ आता है — किसी ऐसे को खो देने का डर जिसकी आप ताज़ीम करते हैं। उलमा ने कहा: ख़श्यह उस शख़्स का डर है जो जानता है कि वो किस से डर रहा है।

तो यह सूरह, जो एक अटकी हुई इंसानियत से शुरू हुई थी, निकलने के रास्ते पर ख़त्म होती है: एक रसूल रौशन दलील ले कर आया; ख़ालिस हो कर अल्लाह की इबादत कीजिए, नमाज़ पढ़िए, दीजिए — और आप 'शर्रुल-बरिय्यह' से 'ख़ैरुल-बरिय्यह' बन जाते हैं, मख़्लूक़ के सबसे बदतर से सबसे बेहतर।

और बेटा, एक आख़िरी शरफ़ की बात: नबी ﷺ ने उबई बिन काब (रज़ि0) से फ़रमाया: 'अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें पढ़ कर सुनाऊँ: लम यकुनिल्-लज़ीन कफ़रू...' उबई (रज़ि0) ने पूछा: क्या उन्होंने मेरा नाम लिया? आप ﷺ ने फ़रमाया हाँ — और उबई (रज़ि0) रो पड़े।

इस सूरह से क्या सीखा

1. इंसानियत ख़ुद को नहीं निकाल सकती थी: हिदायत को उतरना ही था — और वो एक रसूल की शक्ल में आई जो पाक सहीफ़े सुनाता था।

2. तफ़र्रुक़ा अक्सर वज़ाहत के बाद आता है, पहले नहीं — देखिए कि आपके इख़्तिलाफ़ात दलील के हैं या अना के।

3. सारा आसमानी दीन एक आयत में: ख़ालिस हो कर अल्लाह की इबादत, हक़ की तरफ़ झुकाव, नमाज़ क़ाइम, ज़कात अदा।

4. इख़्लास ही इबादत और तमाशे के दरमियान फ़र्क़ है — देखिए आप किसके लिए परफ़ॉर्म कर रहे हैं।

5. जानमाज़ और खुले हाथ को कभी अलग मत कीजिए: नमाज़ और ज़कात हमेशा साथ चलती हैं।

6. एक ही मख़्लूक़ सबसे बदतर भी हो सकती है और सबसे बेहतर भी — और फ़ैसला सिर्फ़ ईमान और अमल करते हैं।

7. चोटी का निशाना रखिए: 'अल्लाह उनसे राज़ी और वो अल्लाह से राज़ी' — उसकी तक़दीर पर अभी राज़ी रहिए, ताकि तब उनकी रज़ा मिले।

या अल्लाह, हमें ख़ैरुल-बरिय्यह में शामिल फ़रमाइए, हमारी इबादत ख़ालिस कर दीजिए, और हमें अपनी रज़ा और आपसे राज़ी रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाइए। आमीन।